प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 03 * JUN 2006 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01.06.06	55				ब्रह्म का **स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण**, ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या, मैं द्रष्टा एवं जगत दृश्य है, दोनों मेरा ही रूप हैं	
2	02.06.06	51				**सच्चिदानंद रूपोहम** यह नाम भी माया की अपेक्षा से है,ज्ञान पुरुष व अज्ञान माया है,माया पुरुष में ही लीन होतीहै	Imp
3	03.06.06	62				संसार का अश्वथ रूप दर्शन, अज्ञान बन्ध है व स्वरूप का ज्ञान ही मोक्ष है	*
4	03.06.06[P]	34		विशेष		अ०रा०-प्रथम सर्ग-राम हृदय :- भगवान राम के निर्गुण-निराकार एवं सगुण-साकार का स्वरूप निरूपण - **Imp.**	*1*
5	04.06.06	52				सीताराम का अभेद दर्शन ही ज्ञान है, गीता अ०१५/१,**जीव** प्रतिबिम्ब, **जगत** छाया-दृश्य है एवं सत्य ब्रह्म द्रष्टा है	Imp
6	04.06.06[P]	35				सियाराम मय सब जग जानी, करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी ।	
7	05.06.06	55				ब्रह्म का स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण **सृष्टिक्रम** :- १.ब्रह्मोपनिषद २ तैत्रीय ३ छा०उ० ४ मुण्डक ५. दृष्टि-सृष्टिवाद	Imp
8	05.06.06[P]	37		विशेष		अ०रा०-प्रथम सर्ग-राम हृदय - सीताजी द्वारा जड़-चेतन विभाग, चेतन ब्रह्म द्रष्टा है व जड़ प्रकृति दृश्य है	*2*
9	06.06.06[P]	36				अ०रा०-प्रथम सर्ग-राम हृदय - तरंग की जल से अभिन्नता की भाँति जीव और ईश्वर भी अभेद हैं	*3*
10	07.06.06[P]	29				जगत लीला मात्र है, केवल राम ही सत्य हैं	
11	08.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
12	09.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
13	10.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
14	11.06.06	61				सामान्य ज्ञान-अज्ञान का साधक और विशेष ज्ञान-अज्ञान का बाधक, **अनादि के ६ प्रकार**	Imp
15	11.06.06[P]	34				राम का स्वरूप ज्ञान निरूपण सीता देह हैं और राम द्रष्टा हैं	**
16	12.06.06	54				ब्रह्म का स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण, **अध्यारोप अपवाद** - प्रपंच का ब्रह्म में अध्यारोप करके मिटा देना, **६अनादियाँ**	Imp
17	12.06.06[P]	34				राम का निर्गुण निराकार स्वरूप ज्ञान निरूपण राम द्रष्टा एवं सीता दृश्य जगत हैं	**
18	13.06.06	57				सामवेद-छा०उ०-सनत कुमारों का नारद को उपदेश, नारदजी की अपरा विद्या का वर्णन	a
19	13.06.06[P]	30				कृष्ण-राधा : रस-रास : जल-लहर : आत्मा-बुद्धि/माया/राधा/आल्हादिनी शक्ति	
20	14.06.06	52				छा०उ०-सनत कुमार का नारद को उपदेश व्यापक अद्वैत ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ नहीं है आत्मा तीनोंकाल में है	b
21	14.06.06[P]	32				Poor recording	
22	15.06.06	50		अतिविशेष		अधिष्ठान - अध्यस्थ का मिथ्या संबन्ध **अहं ब्रह्मास्मि** **अजपा गायत्री** :: अहं सः - सो अहं	Imp
23	16.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
24	17.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
25	18.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
26	19.06.06	39				ओंकार का स्वरूप निरूपण ओंकार ब्रह्म का नाम है व ब्रह्म प्रणव/प्रकृति का द्रष्टा है	**
27	20.06.06[P]	34				अ०रा०-प्रथम सर्ग-राम हृदय :- भगवान राम के निर्गुण-निराकार एवं सगुण-साकार का स्वरूप निरूपण	*4*
28	21.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
29	22.06.06	61				भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को अपना निर्गुण-निराकार स्वरूप निरूपण, परमार्थ - स्वरूप लीला है	Imp
30	23.06.06	51				अहं का वाच्यार्थ व्यवहारिक है एवं लक्ष्यार्थ पारमार्थिक है,**अहं ब्रह्मास्मि,** माया-सपना-मिथ्या सब असत् के पर्याय हैं	Imp
31	24.06.06	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
32	25.06.06	65				तीनों शरीरों की रचना, काल एवं आत्म स्वरूप विवेचन, शरीर मात्र छाया रूप है - संसार मिथ्या है	Imp
33	26.06.06	50		७/४-६		अष्टधा अपरा, परा प्रकृति एवं पुरुष दसवाँ, **स्वधर्म-परधर्म निरूपण**, निद्रा/माया मेघ और जा०स्व० बरसात है	Imp
34	26.06.06[P]	33				सीताजी द्वारा भगवान का नि०नि० स्वरूप निरूपण, **५ माताओं का वर्णन**, धर्म अविरुद्ध काम-क्रोध भी वाछिंत हैं	
35	27.06.06	65				देह-देही भेद, स्वयं को नि०नि० देही जानो तथा देह से तादात्म्य छोड़ो । कथा - यदुवंश नाश की ।	
36	27.06.06[P]	35				अध्यात्म रामायण : शिव पार्वती सम्वाद : राम तत्व निरूपण	